“परमेश्वर ने कलीसिया में पहिले प्रेरितों को, दूसरे भविष्यद्वक्ताओं को, तीसरे शिक्षकों को ठहराया, फिर सामर्थ्य के काम, फिर चंगाई के वरदान, सहायता करने, हाकिम होने, और भिन्न भिन्न भाषाओं के वरदान ठहराए। क्या सब प्रेरित हैं? क्या सब भविष्यद्वक्ता हैं? क्या सब शिक्षक हैं? क्या सब सामर्थ्य के काम करते हैं? क्या सब चंगाई के वरदान रखते हैं? क्या सब भाषाएँ बोलते हैं? क्या सब उनका अर्थ लगाते हैं? परन्तु उत्तम वरदानों की लालसा करो; और मैं तुम्हें एक बहुत उत्तम मार्ग दिखाता हूँ।” — 1 कुरिन्थियों 12:28–31

हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की स्तुति हो!
आज हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हुए उस विषय पर ध्यान देंगे जिसका शीर्षक है — “सबसे बड़ा वरदान”

ऊपर के पदों में हम देखते हैं कि बाइबल बताती है — आत्मिक वरदानों में कुछ बड़े हैं, पर उनमें से एक वरदान ऐसा है जो सबसे बड़ा है।
जिसके पास यह वरदान होगा, उसका सेवकाई का कार्य सबसे महान होगा।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

प्रेरित पौलुस यहाँ कई वरदानों का उल्लेख करते हैं — प्रेरिताई, शिक्षण, चमत्कार, चंगाई के वरदान, सहायता, प्रशासन, भाषाएँ बोलना, भाषाओं का अर्थ लगाना, भविष्यवाणी आदि।
वे बहुत से वरदानों का नाम लेते हैं, लेकिन यह नहीं बताते कि इनमें से “सबसे बड़ा” कौन है।

मानव दृष्टि से कोई सोच सकता है कि चंगाई का वरदान सबसे बड़ा है, कोई कह सकता है प्रेरिताई, कोई भविष्यवाणी या भाषाएँ बोलना। हर किसी की अपनी राय हो सकती है।

पर पौलुस जब कहते हैं —

“उत्तम वरदानों की लालसा करो, और मैं तुम्हें एक बहुत उत्तम मार्ग दिखाता हूँ।” — 1 कुरिन्थियों 12:31

तो वे स्पष्ट करते हैं कि वे एक और भी उत्कृष्ट मार्ग दिखा रहे हैं — अर्थात “सबसे बड़ा वरदान”।

यह जानने के लिए हमें अगले अध्याय में जाना होगा, जहाँ पौलुस उस “अधिक उत्तम मार्ग” की व्याख्या करते हैं:

“यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएँ बोलूँ, पर मुझ में प्रेम न हो, तो मैं झनझनानेवाला पीतल या झनझनानेवाली झांझ हूँ।
और यदि मुझे भविष्यद्वाणी का वरदान हो, और सब भेदों और सब प्रकार की ज्ञान की समझ हो, और ऐसा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, पर मुझ में प्रेम न हो, तो मैं कुछ भी नहीं।
और यदि मैं अपनी सारी सम्पत्ति दीनों को दे दूँ, और यदि मैं अपने शरीर को जलाए जाने के लिये सौंप दूँ, पर मुझ में प्रेम न हो, तो मुझे कुछ लाभ नहीं।
प्रेम धैर्यवान है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं; वह अशिष्ट व्यवहार नहीं करता, अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुराई का लेखा नहीं रखता;
अधर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य के साथ आनन्द करता
है; सब कुछ सह लेता है, सब कुछ विश्वास करता है, सब कुछ आशा
रखता है, सब कुछ सह लेता है।
प्रेम कभी समाप्त नहीं होता।” — 1 कुरिन्थियों 13:1–8

पौलुस स्पष्ट कहते हैं कि यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएँ बोलूँ, पर प्रेम न रखूँ — मैं कुछ नहीं।
यदि मेरे पास भविष्यद्वाणी का वरदान हो, विश्वास हो, ज्ञान हो — पर प्रेम न हो, सब व्यर्थ है।

सारे वरदान प्रेम के बिना अर्थहीन हैं।

क्योंकि प्रेम ही वह वरदान है जो स्वयं परमेश्वर से आता है। शास्त्र कहता है —

“जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता; क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।” — 1 यूहन्ना 4:8

परमेश्वर न तो केवल प्रेरित हैं, न भविष्यद्वक्ता, न चंगाई करनेवाले —
परमेश्वर स्वयं प्रेम हैं।

परमेश्वर ने हमें इसलिये नहीं बनाया कि वे चमत्कार करते हैं, बल्कि इसलिए कि वे प्रेम हैं।
उन्होंने हमें जीवन दिया क्योंकि वे प्रेम हैं।
वे हमारे पापों को क्षमा करते हैं, हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, हमारी रक्षा करते हैं — सब प्रेम के कारण।

इसलिए, भाइयो और बहनो, जब हम नए वर्ष में प्रवेश करते हैं, तो केवल आशीषों की मांग न करें, बल्कि यह भी मांगें कि हम प्रेम से परिपूर्ण हों — जैसे परमेश्वर हैं।

इस वर्ष को प्रेम और उदारता का वर्ष बनाइए।
क्षमा करना सीखिए जैसे मसीह ने आपको क्षमा किया।
किसी से बैर या प्रतिशोध न रखिए।
सच्चे हृदय से दूसरों को आशीष दीजिए, और आप भी आशीषित होंगे।

क्योंकि बाइबल कहती है —

“जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।” — लूका 6:38

जब आप नए वर्ष का पृष्ठ पलट रहे हैं, तो अपने आत्मा को नया कीजिए।
तब आप सच में परमेश्वर को जानेंगे, और स्वयं परमेश्वर का प्रेम, सुरक्षा और अनुग्रह आपके साथ रहेगा — क्योंकि वह प्रेम है।

मेरी प्रार्थना है कि प्रभु आपको इस वर्ष में भरपूर आशीष दें — आपके घर, आपके परिवार, और आपके सभी कार्यों में।
वह आपको स्वास्थ्य, शांति और सफलता प्रदान करे —
यीशु मसीह के नाम में।

आमीन!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp